64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തീയതി....................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

हारना मेरेलिए मंजूर नहीं

"हे भगवान ये मेरे साथ क्या हो गया? हमेशा मेरे साथ ही ऐसा क्यु होता है?" रोते-रोते सूरज अपने माँ से कह रहा था।

ये कहानी एक छोटा गाँव के एक गरीब परिवार के लडके का है। 25 जून 1995 में एक गरीब परिवार में एक बेटे का जन्म हुआ। उनका परिवार बहुत गरीब था। उसके माँ-बाप ने उसका नाम "सूरज" रख दिया क्युकि वो कहते थे कि अगर वो दोनों जिंदा है तो सिर्फ और सिर्फ अपने बेटे केलिए वर्णा वो तो मजदूरिन के पहले से ही अपने जिंदगी से हार मानलिया होता। उनके लिए उनका बेटा सबकुछ था। अपने बेटे को एक अच्छी जिंदगी देने कि इच्छा ही उनको जीवन में आगे बढने की प्रेर्णा देती थी।

सूरज बहुत शरारती और बहुत ही मासूम बच्चा था। वो अपने गाँव केलोगों के आँखों का तारा था और अपने माँ-बाप के

लिए वो सबकुछ था। उसके नाम के तरह वो जहा भी जाता था वह खुशियों की रोशनी को फैलाता था। उसके माँ और पापा दोनों मज़दूरिन थे। दिन रात मेहनत करके वो दो रोटी कमाती थी। सूरज अपने माँ-बाप के मेहनत और उनका त्यागदेखकर बड़ा हुआ है। घर में कैसा भी हालत हो सूरज जो माँगता था उसे लाकर देनेकेलिए उसका माँ-बाप अपने जान देनेकेलिए भी तैयार थे। सूरज पढाई में तेज़ था। उसे बड़ा होकर अपने माँ-पापा को एक अच्छी जिंदगी देनी थी। एक ऐसा जीवन जिसमें वो तीनों खुश रहे।

सब कुछ अच्छा चल रहा था और सूरज अब बारवीं का परिक्षा देने केलिए तैयार हो रहा था। सूरज ने दसवीं में बहुत अच्छे अंकों से पास हुआ था। उस दिन सूरज ने अपने माँ-बाप के आँखों में गर्व के एक अलग सी ~~रोशनी~~ ~~चमक~~ दिखी। वो हमेशा अपने माँ-बाप को ऐसे ही देखना चाहता था। इसलिए वो दो गुना मेहनत करके बारवी में अच्छे अंकों से पास होना चाहता था। परंतु जिंदगी का कुछ और ही फैसला था।

आज उसका पहला परिक्षा थी और वो बहुत ही परिशान थे जैसे सारे बच्चे होते हैं। उसके माँ और पापा ने ये देख लिया था।

सूरज के माँ : अरे जी सुनोता आज हमारा सूरज कुछ परिशान दिख रहा है।

सूरज के पापा : हाँ, पता नहीं वो क्यों इतना डर रहा जब हम दोनों उसके साथ खडे है तो।
उसका मन हल्का करना पडेगा।

सूरज के माँ : आप ठीक कह रहे हो जी हमें उसे यकीन दिलाना होगा कि उसके जिंदगी जब भी कोई भी परिशानी या मुसीबत हो तो उसे डरने के या हम क्या सोचेंगे या हम डाँटेंगे ये सब सोचने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि हम उसके ~~साथ~~ कदम - कदम पर साथ देंगी है ना जी?

सूरज के पापा : ये भी पूछने वाली बात है। हम हमेशा उसके साथ है या हम जीवित रहें या ना रहें।

सूरज के माँ : ऐसे मत बोलो जी। शुभ-शुभ बोलो...

सूरज के पापा : हाँ, अरे सूरज इधर आओ बेटा।

सूरज : क्या हुआ पापा?

सूरज के माँ : बेटा, तु परिशान मत हो तेरे पापा और तेरी माँ हमेशा तेरे साथ है।

सूरज के पापा : बेटा तु एक शेर का बेटा हो जा तु परिक्षा में शांती से जा और तुझे जो आता है वो लिख कर आओ। तेरे पापा तेरे साथ है।

सूरज : वो सब तो ठीक है पापा लेकिन यह शेर कौन है?

(सूरज और माँ हँसते हुए और उसके पापा को परिशान करते हुए पुछता है)

सूरज के पापा : शेर कौन है? तो तु इस गाँव के सबसे हिम्मतवाला, साहसवाला आदमी तेरे पापा को नहीं जानता?

सूरज : मेरे पापा को तो मैं जानता हूँ परंतु ये सबसे हिम्मतवाला, साहसवाला आदमी को मैं नहीं जानता

सूरज के माँ : मैं भी नहीं जानती

(सूरज और माँ दोनों हाथ मिलाते है)

Item Code: 952 തിയ്യതി.................... Participant Code: 035

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ തൃശ്ശൂർ

सुरज के पाप : अरे ये तुम लोग ठीक नहीं कर रही हो। तुम माँ और बेटा ऐसे साथ मिलकर मेरा मज़ाक नहीं उड़ा सकते।
(सुरज के पापा नाराज़ होने का नाटक करता है)

सुरज और सुरज की माँ एक स्वर में : अरे हम मज़ाक कर रहे थे

सुरज के पापा : पता है। मैं भी तो मज़ाक कर रहा था।

(तीनों खुश होते है और साथ में हंसने लगता है)
परंतु वो तीनों यह नहीं जानते थे कि यह उनका एक साथ का आखरी मुलाकात था।

सुरज अपने परिक्षा देने केलिए जाता है। उसका परिक्षा अच्छे से होता है और उसकी मेहनत रंग लाता है। परंतु एक तरफ उसका ज़िंदगी का रंग भगवान अपने पास बुलाता है।

सुरज के पापा अपने काम खत्म करके अपने परिवार के साथ दो पहर का खाना खाने केलिए आ रहा था और रास्ते में ही सुरज से मिलता है। सुरज और उसके पापा रास्ते के अलग-अलग

दिशा मे थे। सूरज के पापा ने सूरज को अवाज़ दी जो उनको देखा नहीं था। अपने पापा को देखने ही वो बहुत खुश हो गया और सूरज के पापा ने उसे इशारा किया कि वो उसके तरफ आ रहा है। जैसे ही सूरज के पापा सूरज के पास आ रहा था तब ही एक तेज़ी से आ रहा कार सूरज के पापा को टकराता है। सूरज के पापा थोड़ी से टकराकर सीदा सूरज के पैरों के नीचे आगिरता है। वो पूरी तरह से घायल था। खून में लिपटा हुआ उनका सार शरीर को देखकर सूरज को सदमा लगा। एक पल पेहले सब कुछ ठीक था और एक ही पल में उसके सारे ज़िंदगी बिगर गया।

सूरज को समझ नहीं पा रहा था कि अब वो क्या करू। सूरज अपने पापा के पास जाता है।

सूरज: पापा, पापा.... आप को ये क्या होगया

पापा: बेटा.... सूरज... तू ठीक है न...

सूरज: मैं ठीक हूँ। मुझे... क्या हुआ है और आप भी ठीक है मैं आपको कुछ होने नहीं दूंगा पापा

(सूरज अपने पापा गले लगाकर चूमता है)

पापा: बेटा.... मेरे पास वक्त नहीं है...

सूरज : ये आप क्या कह रही हैं हाँ। आपको कुछ नहीं होगा (सूरज रास्ते से जाते हुए गाड़ियों से मदद माँगता है।) अरे कोई भी मेरे पापा की मदद करो, कोई भी रुको। लेकिन दुर्भाग्य से कोई भी गाड़ी नहीं रुकता

पापा : बेटा सूरज....

सूरज : हाँ पापा, आप फिक्र मत किजिए मैं आपको कुछ नहीं होने दूँगा। (सूरज फूट फूटकर रोने लगता है)

पापा : बेटा मेरी बात सुनो... मेरे जाने के बाद अपना और अपने माँ ख्याल रखना... मुझे प...पता है कि मेरे... मेरा बेटा पढ़ लिखकर बहुत बड़ा... आदमी बनेगा है... न....

सूरज : हाँ पापा लेकिन मुझे आपको बचाना है आप हमें छोड़कर कहीं नहीं जाएगा

पापा : बेटा मुझे वादा करो कि चाहे कैसी भी हालात हो तुम पढ़ाई नहीं छोडोगे वादा... वादा करो...

सूरज : लेकिन,

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിരുവനന്തപുരം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

पापा : वादा करो बेटा...

सूरज : वादा मैं अपने पढाई किसी भी हालत में नहीं छोड़ूंगा।

सूरज के पापा इस दुनिया से चल गुज़र जाता है।

पापा.... पापा... आप मुझे छोड़कर कहीं नहीं जा सकते...

कुछ महीने बाद... सूरज अपने पापा को दिया हुआ वादा निभानेकेलिए जैसी भी करके अपने बारवीं परिक्षा देता है। गाँव के लोग सूरज को अनाप-शनाप बोलते है लेकिन वो जानते थे कि वो जो कुछ भी कर रहा हूँ अपने माँ पापा के लिए कर रहा हूँ। सूरज का बारवी का रिसल्ट आता है और सूरज अपने स्कूल में प्रथम आता। सूरज के अपने मन में एक आई.पी.एस ऑफिसर बनने का फैसला लेता है ताकी वो इस देश में होनेवाली अन्याय को रोक सके। क्योंकि ऐसी ही एक अन्याय उसके पापा के साथ हुआ था। एक अंजान आदमी ने शराब के नशे में गाडी चलाया और उसके पापा को टकराया सूरज उस आदमी के खिलाफ

Item Code: 952 Participant Code: 035

पुलिस में केस दर्ज किया परंतु बड़े लोग के ~~स्वाद~~ स्वाधीन के कारण कुछ नहीं हुआ। इसलिए वो एक पुलिस ऑफिसर बनना चाहता था ताकि फिर कभी वो किसी भी सूरज के साथ नहीं। सूरज दिन रात मेहनत करके पढ़ाई करता था वो पढ़ाई के साथ काम करने कॉलिज भी जाते थे क्योंकि पापा के गुज़र जाने के बाद उसके माँ पूरी तरह से टूट चुकी थी और वो अभी भी सिर्फ ~~अथ~~ सिर्फ सूरज के लिए जीते थे। उनका ~~हाला~~ हालत बहुत नाज़ुक थी इसलिए सूरज ने ज़िद करके उनको घर में आराम करने ~~के लिये~~ के लिए बिठालिया। गाँव के लोग उसे पागल बोलते थे क्युकि वो सुबह-सुबह तीन बजे उठकर तैयारी करता था। जैसे-जैसे दिन बीता माँ का हालत बहुत ही ज्यादा बिगड़ गया और एक दिन माँ उसे छोड़कर चली गई फिर से उसे माँ ने एक वादे में ~~बाद~~ उसे छोड़ दिया कि चाहे जो भी कारण हो ~~मेरी बेटा~~ मेरा बेटा आई.पी.एस ऑफिसर बनके अपने पापा और ~~मा~~ माँ का सपना पूरा करेगा।

इस सब से सूरज पूरी तरह से टूट चुका था और एक जिंदा लाश बन गया था। फिर भी अपने माँ-पापा के चेहरे को और उनकी आखिरी मिलन को याद करके वो आगे बढ़ता रहा। अपने माँ से वो आखिरी बार पूछा कि "हे भगवान ये मेरे साथ क्या हो गया? हमेशा मेरे साथ ही ऐसा क्यू होता है?" तब इसकी माँ ने एक बात कही थी जो आज भी और हर दिन उसके स्वानों में पड़ता है कि "बेटा भगवान उसे ही दर्द देते ही जो इसको सहन करने कि क्षमता रखते हैं जैसे कि मेरा बेटा, और भगवान ने तुम्हें तुम्हारी आगे के जिंदगी के लिए तैयार करने के लिए तुम्हें तैयार कर रहा है पुत्र और ये मत भूलना कि "हारना तेरे लिए मंजूर नहीं है"" इसको प्रेरणा बनाकर सूरज आगे बढ़ता था। समय का खेल है। एक समय था जिसमें उसके माँ-पापा उसके प्रेरणा में जीता था और आज का समय है जिसमें वो अपने गुज़रे हुए माँ-पापा के प्रेरणा में जीवन में आगे बढ़ रहा है।

आखिर में वो दिन आ गया जिसके लिए भगवान
ने उसे तैयार किया था। उसका परिक्षा था और
वो उसमें पुरे राजस्थान में नहीं पुरे देश में
वो प्रथम आया। जो लोग उसे पागल कहते थे
आखिर में वो उसका तारीफ कर रहा था।
सूरज ने नहीं आई.पी. ऑफिसर सूरज आखिर
अपने माँ-पापा के सपने को साकार किया

फिर से पुष्कर में एक केस आता है
जिसमें एक छोटी सी बच्ची के दोनों माँ-पापा
एक हादसे में गुजर जाता। लेकिन वो असल
में एक हादसा नहीं था एक ~~अन्य~~ लापरवाही थी।
अमीर लोगों ने मिलकर उस केस को
मिटाने की बहुत सी ही कोशिश की परंतु सूरज
ने उस केस में उस बच्ची के जगह उस
सत्यप्रकाश के बेबस, लाचार सूरज को देखा जो
अपने पापा को बचाने में और न्याय देने में
असफल रहा। सूरज ने अपनी कोशिश और मेहनत
से उस असली गुनेगार को सजा दिलवाया और
वो बच्ची ने सूरज से धन्यवाद कहने को आया
और पूछा कि आप से गरीब के लिए इतना कष्ट

क्योंलिया और सूरज ने उस अपने ज़िंदगी एक कहानी के रूप में ~~बा~~ बनाया। और ~~अं~~ में ~~उस~~ उस बच्चों ने पूछा आप को आगे बढ़ने की हिम्मत कैसे मिलती थी तो सूरज ने ~~यह~~ गर्व से कहाँ क्योंकि "हारना मेरेलिए मंज़ूर नहीं" और ये कहते उसकी नज़र में गर्व से चमकते हुए अपने माँ-पापा का चेहरा और उसका पूरी ज़िंदगी दिखायी दी....